प्राक्कथन

भाषा विचार विनिमय का बेजोड साधन है । अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उसके उपयोग एवं प्रयोग की दृष्टि से भाषा के रूपों में, उसकी संरचना में विविधता का होना स्वाभाविक है । संरचना की दृष्टि से स्वन, रूप, शब्द, पद, वाक्य आदि भाषा के विभिन्न स्तर होते हैं । इनमें शब्दों का अपना विशेष महत्व है, क्योंकि वही भाषा का अर्थतत्व का संवाहक है । शब्द भी कई प्रकार के होते है – एकार्थी, पर्यायवाची, पारिभाषिक आदि । हर भाषा में पारिभाषिक शब्दों की अपनी अलग पहचान है, क्योंकि ज्ञान विज्ञान के हर क्षेत्र में सुनिश्चित अर्थ एवं पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता है। हर विकसित भाषा के ज्ञान-विज्ञान की प्रत्येक शाखा में पारिभाषिक शब्दावली का होना आवश्यक भी नहीं अनिवार्य भी है ।

भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में, हिन्दी दुनिया की महत्वपूर्ण भाषा मानी जाती है । स्वतंत्रता के बाद हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों का निर्माण एवं विकास त्वरित गति से हो रहा है । ज्ञान विज्ञान की प्रायः सभी शाखाओं में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण अवश्य हुआ है । नये-नये शब्दों को उन शब्दावलियों के साथ जोड़ने का और युगानुरूप प्रचलित शब्दों को संवारने या सुधारने का प्रयास भी चल रहा है ।

"हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (सूचना प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार माध्यम के विशेष संदर्भ में)" शीर्षक प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मैं ने हिन्दी की पारिभाषिक शब्दों का विकास विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है । सूचना प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार माध्यम ज्ञान विज्ञान की अन्य शाखाओं की तुलना में

बिलकुल नई है । अतः मैं ने विशेष अध्ययन के लिए इन दोनों क्षेत्रों को चुन लिया है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैं ने संपूर्ण शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है । शोध प्रबन्ध का पहला अध्याय है – "पारिभाषिक शब्द : परिभाषा, स्वरूप एवं निर्माण ।" प्रस्तुत अध्याय में पारिभाषिक शब्द और उसकी आवश्यकता के बारे में उल्लेख करके सामान्य और पारिभाषिक शब्दों के अन्तर को मैं ने व्यक्त किया है । आगे पारिभाषिक शब्द का स्वरूप अर्थात् उसकी परिभाषा, अर्थ और विशेषता के बारे में भी समझाने का प्रयास किया गया है । पारिभाषिक शब्दों की माँग एवं आवश्यकता आजकल बढ़ रही हैं । इसकी पूर्ति करना भी आवश्यक है । ज्ञान विज्ञान के नये नये शब्दों के निर्धारण अथवा निश्चयन के लिए भाषा विद्वानों ने ग्रहण, अनुकूलन, संचयन और निर्माण आदि चार पद्धतियाँ अपनायी हैं, उक्त पद्धतियों का उल्लेख प्रस्तुत अध्याय में किया है और पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न विद्वानों के द्वारा किए गए वर्गीकरण भी प्रस्तुत अध्याय में दिए गए हैं ।

दूसरा अध्याय है "हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास विभिन्न आयाम ।" प्रस्तुत अध्याय में पारिभाषिक शब्दों का महत्व व्यक्त करते हुए हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली के विकास के विभिन्न आयामों की ओर प्रकाश डाला गया है । 'स्वतंत्रता के पूर्व' और 'स्वतंत्रता के बाद की विकास यात्रा' के शीर्षक से दो भागों में बाँटकर विभिन्न आयामों की चर्चा मैं ने की है । शब्दों के निर्माण संबन्धी विभिन्न विद्वानों या विशेषज्ञों जैसे डॉ. रघुवीर, डॉ. भोलानाथ तिवारी, श्री हरिबाबू कंसल आदि के योगदान का उल्लेख इस अध्याय में हुआ है ।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा, केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद्, भारतीय अनुवाद परिषद, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड, वैज्ञानिक तथा तकनीकी

शब्दावली आयोग आदि प्रमुख संस्थाओं के बारे में प्रस्तुत अध्याय में चर्चा हुई है ।

तीसरा अध्याय है – "हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ।" प्रस्तुत अध्याय में हिन्दी पारिभाषिक शब्दों की अनिवार्यता को सूचित करके ज्ञान-विज्ञान के प्रमुख क्षेत्रों के प्रचलित शब्दों का उल्लेख किया है । इसमें कामकाजी शब्दावली, बैंकिंग क्षेत्र की हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली, विज्ञापन संबन्धी शब्दावली, आकाशवाणी या रेडियो संबन्धी शब्दावली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली, हिन्दी में परिवहन शब्दावली, हिन्दी में उपग्रह शब्दावली, हिन्दी में विधि शब्दावली, कंप्यूटर संबन्धी शब्दावली, नियुक्ति एवं स्थापना शब्दावली, शासकीय प्रक्रियाओं की शब्दावली, हिन्दी में वाणिज्य शब्दावली, हिन्दी में भौतिकी शब्दावली आदि प्रमुख है । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों के बारे में यहाँ बताया गया है ।

चौथा अध्याय है – "सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यमों के प्रयुक्त हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली : एक विश्लेषण ।" प्रस्तुत अध्याय में सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यम के क्षेत्रों के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण किया गया है। शब्दों के अर्थ, संप्रेषण की क्षमता, लोकप्रियता और नए नए शब्दों की आवश्यकता आदि विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है। वर्तमान जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी की अहम भूमिका है। जनसंचार माध्यम जन जीवन से इतना जुडा है कि उससे अलग होना एकदम कठिन है। दोनों क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण काफी मात्रा में हुआ है । दिन-ब-दिन नई दिशा की ओर अग्रसर होनेवाले इन दोनों क्षेत्रों में नए नए पारिभाषिक शब्दों की माँग बढ़ रही है और उसके निर्माण की निरंतर आवश्यकता भी है। आजकल अंग्रेज़ी शब्दों के प्रयोग से इन दोनों क्षेत्रों में अधिकांश काम चल

रहा है ।

विश्लेषण की दृष्टि से दोनों क्षेत्रों के जिन शब्दों का प्रयोग हो रहा है उन्हें स्रोत की दृष्टि से अर्थात् संस्कृत के आये शब्द, हिन्दी के अपने शब्द, अंग्रेज़ी के शब्द, अन्य प्रकार के शब्द – इस प्रकार वर्गीकरण करके अध्ययन किया है ।

पाँचवाँ अध्याय है उपसंहार । उपसंहार के अंतर्गत शोध प्रबन्ध के समस्त अध्ययन का सारांश दिया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का वास्तविक श्रेय कालिकट विश्वविद्यालय के असोसिएट प्रोफेसर डॉ. आर. सेतुनाथ जी को है । आपका विद्वतापूर्ण निर्देशन और स्नेहयुक्त सहयोग, विषय-चयन, लेखन, संशोधन संबन्धित समस्यानुकूल परामर्श तथा कुशल मार्ग दर्शन से ही मैं यह शोध प्रबन्ध पूर्ण कर सका हूँ । मैं अपने श्रद्धेय गुरुवर के प्रति सहृदय आभारी हूँ ।

वर्तमान अध्यक्ष महोदया डॉ. फातिमा जीम जी के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ, जिनका सहयोग भी समय समय पर मुझे मिला है । विभाग के अन्य गुरुजनों के प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने भी मुझे आवश्यक प्रोत्साहन दिया है । विभाग के भूतपूर्व आचार्यों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनका प्रोत्साहन मुझे बराबर मिलता रहा ।

भारत के विभिन्न भागों से प्रकाशित पत्रिकाओं से मुझे कई मूल्यवान सामग्रियाँ मिली हैं। भाषा, संग्रथन, नव निकष, राजभाषा भारती, मंगला, कयर : स्वर्णिम रेशा आदि इनमें शामिल हैं । इनके संपादकों के प्रति मैं आभारी हूँ । कई संपादकों के शब्द कोश से मुझे जानकारी मिली है उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ ।

विविध पुस्तकालयों एवं संस्थाओं से मुझे अपने शोध कार्य में सहायता मिली है। उन संस्थाओं के अधिकारियों एवं पुस्तकालय अध्यक्षों के प्रति विशेषकर कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग पुस्तकालय, सी.एच. मुहम्मद कोया पुस्तकालय, केन्द्रीय साहित्य अकादमी नई दिल्ली, जवहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली, तुलसी सदन (Central Secretariat Library) नई दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के कार्यकर्ताओं के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ ।

अभी मैं सरकारी वोकेषणल हयर सेकंडरी स्कूल, पय्योली (कालिकट) की अध्यापिका हूँ । प्रस्तुत शोधकार्य में यहाँ के प्रधान अध्यापिका श्रीमती के.के. कमला जी तथा अन्य अध्यापक बन्धुओं से जो प्रोत्साहन मिला है उसके लिए उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ ।

इन सबके अलावा जिन मित्रों एवं हितैषियों ने मेरी मदद प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से की है उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ ।

इस शोध प्रबन्ध को विद्वानों के समक्ष विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत करता हूँ ।

विनम्रतापूर्वक

बिन्दु. सी.पी.